9

पौलुस ने बपतिस्मे के विषय में सिखाया

''... पौलुस वचन सुनाने की धुन में लगकर यहूदियों को गवाही देता था कि यीशु ही मसीह है। ... और बहुत से कुरिन्थी सुनकर विश्वास लाए और बपतिस्मा लिया'' (प्रेरितों 18:5-8)।

पौलुस जो शाऊल, कलीसिया का बड़ा सताने वाले के रूप में भी प्रसिद्ध है, यीशु मसीह के सुसमाचार का बहुत बड़ा प्रचारक बन गया था। उसकी सेवकाई यीशु को देखने, प्रार्थना करने, तीन दिन तक उपवास रखने और अपने पापों को धोने के लिए बपतिस्मा लेने के बाद आरम्भ हुई थी (प्रेरितों 22:16)। जिस *विश्वास* को पौलुस कभी सताता था उसी विश्वास को मानकर अब वह उसका प्रचार करने लगा था (गलतियों 1:23)। उसने उसे मनुष्यों से *नहीं* (गलतियों 1:11, 12) बल्कि आत्मा के द्वारा (इफिसियों 3:3) स्वयं यीशु से सीखा था (1 कुरिन्थियों 14:37)।

एक प्रेरित के रूप में, पौलुस ने उसी संदेश का प्रचार किया जिसका प्रचार बारह प्रेरितों व नये नियम के अन्य सभी भविष्यवक्ताओं ने भी किया था। इस कारण पौलुस का सुसमाचार, आत्मा की प्रेरणा प्राप्त अन्य लोगों की तरह, ही सत्य सुसमाचार था। कोई भी जो किसी दूसरे सुसमाचार का प्रचार करता हो, वह श्रापित होगा (गलतियों 1:8, 9)। पतरस के अनुसार, पौलुस की पत्रियां लिखे हुए से मेल खाती थीं और उन में भी पवित्र शास्त्र की अन्य बातों की तरह ही अधिकार था (2 पतरस 3:15-17)। पौलुस की समस्त शिक्षा को आत्मा की प्रेरणा प्राप्त अन्य लोगों की शिक्षा का प्रतिबिम्ब माना जा सकता है।

बेशक पौलुस के कुछ प्रवचनों के संक्षिप्त विवरण प्रेरितों के काम की पुस्तक में दर्ज हैं (प्रेरितों 13:16-41; 14:15-17; 22:1-21; 26:2-23), परन्तु उसके अपने बपतिस्मे के हवाले को छोड़कर (22:16) बपतिस्मे से सम्बन्धित किसी भी कथन को नहीं लिखा गया है। उससे प्रचार सुनने वालों ने बपतिस्मा लिया (16:15, 33; 18:8) जिससे संकेत मिलता है कि उसके प्रचार में बपतिस्मा शामिल था। उसके पत्रों से बपतिस्मे की उसकी समझ और इस तथ्य का कि उसने कुछ लोगों को बपतिस्मा दिया, पता चलता है (1 कुरिन्थियों 1:16)।

पौलुस के पत्रों में बपतिस्मे को यीशु की मृत्यु, गाड़े जाने, और पुनरुत्थान के प्रत्युत्तर में मनपरिवर्तन के रूप में वर्णित किया गया है न कि किसी खोखले संस्कार, व्यर्थ समारोह या बिना समझे आज्ञा मानने का बपतिस्मा।

रोमियों 6:1-18

रोमियों 5 में पौलुस ने यीशु को उस अनुग्रह के आधार के रूप में प्रस्तुत किया जो उसके जीवन, लहू और मृत्यु (5:9, 10) के द्वारा हमें धर्मी ठहराता (5:2, 15, 17, 20, 21), बचाता, और परमेश्वर से मिलाता है (5:1, 9, 10)। ये सब लाभ, जो बपतिस्मे के द्वारा यीशु की मृत्यु, गाड़े जाने और जी उठने में सहभागिता करने पर अनुग्रह से दिए जाते हैं, पाप करने को उत्साहित करने के लिए नहीं (रोमियों 6:1, 2) बल्कि हमें पाप भरे जीवन से स्वतन्त्र करने के लिए हैं (रोमियों 6:2)। मन से अच्छी तरह समझने और मानने पर बपतिस्मा पाप *से मृत्यु व स्वतन्त्रता* का कारण बनता है (रोमियों 6:4-6, 17, 18)।

रोमियों 6:3, 4 में बपतिस्मे पर पौलुस द्वारा चर्चा करने का उद्देश्य बपतिस्मे को ऐसे कार्य के लिए प्रस्तुत करना नहीं है जो यीशु की मृत्यु के सभी लाभों का द्वार खोल देता है, बेशक ऐसे लाभ मसीह और उसकी मृत्यु में बपतिस्मा लेने से सम्भव किए जाते हैं। बल्कि, पौलुस यह दिखाना चाहता था कि *पाप से मृत्यु* के कारण बपतिस्मा लेते समय जब कोई उसको मानकर कि जो यीशु ने उसके लिए किया है यीशु की मृत्यु में भागीदार होता है तो पाप से छूटकर नया जीवन पाता है।

पौलुस कह रहा था, ''बपतिस्मे के द्वारा यीशु की मृत्यु में प्रवेश किया जाता है। मृत्यु में प्रवेश करने का अर्थ उसके साथ मरना भी है, इसलिए बपतिस्मा यीशु के साथ मृत्यु को दर्शाता है। यहां पर, मृत्यु का अर्थ पाप से मरना है जिससे किसी के पाप भरे अतीत के बाद नया स्वतन्त्र जीवन मिलता है।'' ''पाप के लिए मर गए'' (रोमियों 6:2) वाक्यांश से, पौलुस का अभिप्राय है कि मसीही लोग पाप की सेवा तथा व्यवहार से मर गए हैं। इस मृत्यु से पाप से स्वतन्त्र होकर नया जीवन अर्थात ऐसा जीवन आना चाहिए जिसका लक्ष्य अब पाप करना नहीं है। पाप से यह मृत्यु बपतिस्मे के समय ही होती है, क्योंकि व्यक्ति बपतिस्मे में यीशु के साथ गाड़े जाकर पाप के लिए मृत्यु में प्रवेश करता है: ''... हमारा पुराना मनुष्यत्व उसके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया, ताकि पाप का शरीर व्यर्थ हो जाए, ताकि हम आगे को पाप के दासत्व में न रहें'' (रोमियों 6:6)। इस प्रकार बपतिस्मे में पाप के लिए मर जाने वाला व्यक्ति ''पाप से छूट'' जाते हैं (रोमियों 6:7, 18)।

यह निश्चित करने के लिए कि कोई यह निष्कर्ष न निकाले कि केवल शारीरिक कार्य ही पाप से स्वतन्त्रता के नये जीवन को प्रभावित नहीं करेगा, पौलुस ने आगे कहा कि बपतिस्मा लेने वाला ''मन से उस उपदेश को माननेवाला'' (रोमियों 6:17) होकर ''पाप से छुड़ाए जाकर धर्म का दास हो'' (रोमियों 6:18) जाता है। यह बपतिस्मे के कार्य के द्वारा होता है, केवल इसलिए *नहीं* कि किसी व्यक्ति ने बपतिस्मा लेने का *शारीरिक* कार्य किया है। नया जीवन इसलिए होता है क्योंकि यीशु की तरह गाड़े जाने के शारीरिक कार्य के साथ,

व्यक्ति अपने पुराने जीवन से मरकर और गाड़े जाकर *आत्मिक* रूप में शामिल हो जाता है ताकि वह नये जीवन के लिए जी उठे।

पौलुस ने बपतिस्मे को किसी पशु के रूप में *नहीं,* बल्कि व्यक्ति के अपने बलिदान के रूप में दिखाया (रोमियों 6:6) है। इस प्रकार पाप के लिए भेंट आज नये नियम में भी लागू है, जो उसके साथ नया जीवन व्यतीत करने के लिए किसी पशु का *नहीं,* बल्कि मसीह के साथ क्रूस पर चढ़कर पापी के अपने पुराने जीवन का बलिदान है (गलतियों 2:20; रोमियों 12:1)। पौलुस के अनुसार, बपतिस्मा इस मृत्यु और क्रूसारोहण के समय ही होता है, परन्तु *केवल* उसका होना है जो हृदय से उसको दी गई शिक्षा के नमूने को मानता है (रोमियों 6:6, 7, 17, 18)।

ऐसा बलिदान केवल संस्कार से ही प्रभावी नहीं हो सकता है। यह निष्कर्ष निकालना कि बपतिस्मा दोष और पाप के दासत्व के साथ बपतिस्मे के सम्बन्ध को समझे बिना परमेश्वर की आज्ञा मानना हो सकता है इस कार्य के पूरे अर्थ को न समझना है। बपतिस्मा व्यक्ति को पुराने जीवन की मृत्यु तक लाना होता है जो नये जीवन का कारण बनता है। बपतिस्मा लेने वाला पाप के प्रति इतना गम्भीर होता है कि वह इसे दूर करना चाहता है और दोबारा इसे न करने का निश्चय कर लेता है। इस प्रकार, बपतिस्मे में वह पाप के लिए मर जाता है और एक नया जीवन जीने के लिए स्वतन्त्र हो जाता है (रोमियों 6:6)।

भूखे आदमी के सामने भोजन रखा जाए तो वह उसे खाने के लिए आगे बढ़ेगा, परन्तु मृत व्यक्ति आगे नहीं बढ़ सकता, चाहे उसका पसन्दीदा भोजन भी उसके मुंह के पास क्यों न रखा गया हो। उसी प्रकार से जो व्यक्ति कभी पाप में लिप्त था परन्तु बपतिस्मे में पाप के लिए मर चुका है तो अब उसे पाप के बहकावे में नहीं आना चाहिए।

मन फिराव नया जीवन आरम्भ करने के लिए मन का निश्चय है; बपतिस्मे से मिलकर, यह निश्चय उस व्यक्ति के लिए नये जीवन का परिणाम बनता है जिसका मन बपतिस्मे के द्वारा यीशु के साथ गाड़े जाकर उसकी मृत्यु तथा पुनरुत्थान के साथ मिल जाता है। इस प्रकार, बपतिस्मा लेने के समय *नया जन्म* होता है। केवल बाहरी कार्य से ही यह बदलाव नहीं हो सकता। (यदि हो सकता, तो शक्तिशाली लोग दूसरे लोगों को नये जीवन में लाने के लिए जबरदस्ती बपतिस्मा दे सकते थे।) ऐसा बदलाव केवल हृदय से मानकर ही लाया जा सकता है। यदि यह निष्कर्ष सही नहीं है, तो रोमियों 6:1-18 में पौलुस का प्रयास कि मन केवल शारीरिक कार्य से ही बदला जाता है, ऐसा निष्कर्ष है जो *न तो* पुराने नियम और न ही नये नियम के सिद्धांतों से मेल खाता है।

गलतियों 3:26, 27

गलतियों 3:26, 27 में बपतिस्मे और बदले हुए जीवन में ऐसा ही सम्बन्ध मिलता है। यहां पौलुस ने बपतिस्मे को उस पल के रूप में प्रस्तुत किया जब विश्वास से कोई परमेश्वर का बालक बनता है अर्थात वह मसीह को पहन लेता है। परमेश्वर का बालक बनने में परमेश्वर से सम्बन्धित होने और परमेश्वर का स्वभाव रखने की धारणा शामिल है। (यूनानी

भाषा में huios, ''पुत्र'' या ''बालक'' शब्द के इस्तेमाल, का अर्थ कई बार *उस स्वभाव का* होता है, मत्ती 23:15; लूका 16:8; यूहन्ना 12:36; इफिसियों 2:2; 1 थिस्सलुनीकियों 5:5)।

परमेश्वर के स्वभाव को अपनाकर कोई मसीह को पहन लेता है। बपतिस्मे का बाहरी कार्य अपने आप में किसी कठोर चित्त अपराधी को खींच कर कलीसिया के भवन में से ले जाकर एक सम्मानित नागरिक या ''संत'' (पवित्र लोग) बनाने और उसके स्वभाव में बदलाव लाने की तरह है। ऐसा बदलाव केवल मन से ही लाया जा सकता है। अच्छी तरह समझकर और मन से *नये सिरे से जन्म* लेना मानने वाला ही बपतिस्मा लेते समय परमेश्वर का बालक बनता है। केवल एक संस्कार से ऐसा बदलाव नहीं लाया जा सकता है।

एक ही बपतिस्मा

एकता पर चर्चा करते हुए पौलुस ने एक देह, आत्मा, आशा, प्रभु, विश्वास और परमेश्वर के साथ *एक ही बपतिस्मे का उल्लेख किया है* (इफिसियों 4:4-6)। इनमें से तीन तो ईश्वरीय ही हैं (आत्मा, प्रभु और परमेश्वर, उनके सम्बन्ध के अनुसार बढ़ते क्रम में रखा गया है); दो (देह और विश्वास) तीनों के द्वारा किए गए प्रबन्ध हैं जो एकता लाने में सहायता कर सकते हैं, और दो (आशा और बपतिस्मा) मनुष्य के प्रत्युत्तर हैं। सात की इस सूची में बपतिस्मे के शामिल होने का तथ्य संकेत देता है कि एकता के लिए परमेश्वर की योजना में बपतिस्मे का कुछ महत्व है।

बपतिस्मा एकता ला सकता है, क्योंकि हृदय से मानने वाले परमेश्वर के बालक बन जाते हैं (परमेश्वर का स्वभाव अपना लेते हैं) तथा वे मसीह को पहन लेते हैं। इस प्रकार, बपतिस्मे से सभी पृष्ठभूमियों के लोग जिनमें ''न कोई यहूदी रहा और न यूनानी; न कोई दास, न स्वतन्त्र; न कोई नर, न नारी; [बल्कि] ... सब मसीह यीशु में एक'' (गलतियों 3:28) हो जाते हैं, एक ही आत्मिक स्वभाव के लोगों में बदल जाते हैं। कोई शारीरिक कार्य जिसमें आत्मिक भाव न हो अलग-अलग समूहों के लोगों में सजातीय स्वभाव और एकता नहीं ला सकता। केवल सुसमाचार की शिक्षा को हृदय से मानकर ही ऐसा बदलाव तथा एकता आ सकती है।

कुलुस्सियों 2:11-13

कुलुस्सियों 2:11-13 में पौलुस ने बपतिस्मे के सम्बन्ध में रोमियों 6:3, 4 का रूपक ही इस्तेमाल किया है; परन्तु, पौलुस के दिमाग में इसका उद्देश्य और भी था। रोमियों 6:1-18 में पौलुस कारण बता रहा था कि मसीह में आने वाले लोगों को पाप में क्यों नहीं लगे रहना चाहिए। कुलुस्सियों 2:11-13 में वह यीशु की महानता (कुलुस्सियों 2:9, 10) और उसमें आने वालों को मिलने वाले लाभों की चर्चा कर रहा था।

मसीह में आने वाले व्यक्ति को उसमें भरपूर किया जाता है (कुलुस्सियों 2:10), जीवन के प्रति उसकी शारीरिक सोच समाप्त हो जाती है और उसके अपराध क्षमा कर दिए

जाते हैं। यह तब होता है जब वह बपतिस्मे में मसीह के साथ गाड़ा जाकर जी उठता है (कुलुस्सियों 2:11-13)। यहां जीवन की शारीरिक सोच को उतारने का वर्णन करने के लिए ''खतने'' के साथ तुलना की गई है। ''अपराधों ... में मुर्दे थे'' शब्द का इस्तेमाल परमेश्वर से अलग होना और पाप के सामने असहाय होकर अपने आपको सौंप देने के वर्णन के लिए किया गया है जिससे व्यक्ति आत्मिक जीवन के बिना हो जाता है। बपतिस्मा लेने से पहले (कुलुस्सियों 2:13) व्यक्ति पाप में मरा हुआ है (उसका कोई आत्मिक जीवन नहीं है) और वह खतना रहित है (अर्थात अभी भी शारीरिक जीवन बिताता है)। बपतिस्मा लेने वाले में, एक बदलाव आता है अर्थात उसका खतना किया जाता है (जीवन के प्रति उसकी सोच बदल जाती है), और उसे जीवित किया जाता है (उसे नया आत्मिक जीवन दिया जाता है) किसी के जीवन में ऐसा बदलाव आत्मिक के साथ-साथ शारीरिक कार्य से ही हो सकता है। बपतिस्मे से जीवन जादू की तरह या रहस्यमयी ढंग से शारीरिक कार्य की तरह *नहीं* बदल जाता; बल्कि इससे आत्मिक तौर पर उनका जीवन बदलता है जो इसके उद्देश्य, अर्थ और आत्मिक महत्व को समझते हैं।

कुलुस्सियों 2:12, 13 के अनुसार बपतिस्मे के समय दो बातें होती हैं: (1) व्यक्ति को मृत्यु से जीवन की ओर लाया जाता है क्योंकि उसका विश्वास है कि परमेश्वर जिसने यीशु मसीह को मुर्दों में से जिलाया था उसे भी आत्मिक मृत्यु से आत्मिक जीवन के लिए जिला सकता है; और (2) मसीह के साथ गाड़े जाकर, जी उठकर और जीवन व्यतीत करके उसका आत्मिक रीति से खतना हो रहा है। बपतिस्मे के लिए शारीरिक रूप से अपने आपको झुकाकर, कोई यीशु मसीह के गाड़े जाने, जी उठने और जीवन में भागीदार होता है। इस तथ्य को महसूस करने और आत्मिक रीति से बांटने पर उसके कार्य से उसके पुराने शारीरिक जीवन को उतारकर उसे एक नया आत्मिक जीवन मिलता है। ऐसी प्रक्रिया से उसका दोबारा जन्म होगा, अर्थात नया जीवन मिल जाएगा (यूहन्ना 3:3-5), और उसके सब अपराध क्षमा कर दिए जाएंगे (कुलुस्सियों 2:13)।

विश्वास, अनुग्रह व बपतिस्मा

बपतिस्मा जिससे जीवन बदलता है और पापों की क्षमा मिलती है वह परमेश्वर द्वारा की गई प्रतिज्ञा की आशीष देने में विश्वास पर आधारित होता है। यह विश्वास तभी हो सकता है यदि बपतिस्मा लेने वाला मिलने वाली आशीष को समझता हो। यीशु ही है जो अनुग्रह के कारण उनको उद्धार देता है, जो अपना विश्वास बपतिस्मे में ही नहीं, बल्कि पापों की क्षमा के लिए *परमेश्वर के काम में रखते हैं* (कुलुस्सियों 2:12)।

जी. आर. बेसले-मुर्रे ने विश्वास और बपतिस्मे के द्वारा परमेश्वर की बात मानने वालों के लिए ही अनुग्रह से परमेश्वर के दानों को माना है:

> परमेश्वर द्वारा विश्वास व बपतिस्मे को दी गई इस पहचान में उपसिद्धांत है जो मुझे अस्पष्ट दिखाई पड़ता है: *विश्वास के लिए बपतिस्मे में अनुग्रह से*

परमेश्वर के देने की तरह बपतिस्मे के संदर्भ के लिए विश्वास के लिए परमेश्वर का अनुग्रह से देना है। ऐसे दानों के दावे करने का विशवस में कोई गुण नहीं है और उन्हें पैदा करने की बपतिस्मे में कोई शक्ति नहीं है; सब कुछ परमेश्वर का है, जो मनुष्य को विश्वास और बपतिस्मे तक लाता है, और अपनी संप्रभुता में अपने देने की आज्ञा देने में प्रसन्न हुआ है। इसलिए विश्वास को आत्मनिर्भर के रूप में प्रस्तुत नहीं किया जाना चाहिए; मसीह इसकी ओर सुसमाचार में, सैक्रामेंटों में, कलीसिया में आता है और इसको इन सबकी आवश्यकता होती है। न ही बपतिस्मे को अपने आप होने वाला माना जाना चाहिए। विश्वास के कार्य को बपतिस्मा लेने के लिए कहना जिसमें बिना मनुष्य का व्यवहार देखे परमेश्वर कार्य करता है या वह समझ सकना जो परमेश्वर बपतिस्मे में करता है, या बपतिस्मे के बाद सही प्रत्युत्तर देने के अभिप्राय का प्रमाण कहना गलत है। इसके बजाय बपतिस्मा विश्वास के लिए परमेश्वर का ठहराया हुआ नियोजित मिलन है।

इफिसियों 2:4-9 और कुलुस्सियों 2:12, 13 की तुलना

यह दावा करने के लिए कि उद्धार के लिए एकमात्र शर्त विश्वास ही है बहुत से धार्मिक गुट इफिसियों 2:8, 9 का इस्तेमाल करते हैं। वे इसे मानते हैं और बपतिस्मे को एक कर्म मानते हैं, इसलिए वे बपतिस्मे को उद्धार के लिए परमेश्वर की एक शर्त के रूप में मानना निकाल देते हैं।

इस प्रकार का तर्क उद्धार से विश्वास को निकाल सकता है, क्योंकि 1 पतरस 3:21 में, पतरस ने लिखा है ''बपतिस्मा ... अब तुम्हें बचाता है।'' यदि हर आयत में से वह *निकाल* लिया जाए जो उसमें *शामिल नहीं* होता (अर्थात उसका अर्थ उन्हीं शब्दों से समझा जाए जो उसमें हैं) तो उद्धार के लिए विश्वास तथा मन फिराव की आवश्यकता नहीं रहेगी, क्योंकि 1 पतरस 3:21 में उनका उल्लेख नहीं है। बाइबल की किसी भी आयत को अन्य आयतों में परमेश्वर की शर्तों को निकालने के लिए इस्तेमाल नहीं करना चाहिए। ऐसा करने से बाइबल अपने आप में ही उलझ जाएगी। बाइबल के वचन को सही ढंग से इस्तेमाल करने के लिए, अन्य आयतों में लिखी बातों को निकालना नहीं चाहिए बल्कि जो बात दूसरी आयतों में शामिल है, उसे साथ मिलाकर समझना चाहिए। यदि कोई बाइबल को इस प्रकार समझे, तो यह अपने आप में एक ही सुर में रहती है।

इफिसियों 2:4-9 और कुलुस्सियों 2:12, 13 की तुलना इफिसियों 2:8 और 1 पतरस 3:21 में सामंजस्य दिखाती है। यह सामंजस्य तब स्पष्ट होता है जब कोई इन आयतों में विभिन्न अभिव्यक्तियों के पौलुस के इस्तेमाल को समझता है। उसने कहा, ''... परमेश्वर ने ... जब हम अपराधों के कारण मरे हुए थे, तो हमें मसीह के साथ जिलाया; (अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है)। और मसीह यीशु में उसके साथ उठाया, और स्वर्गीय स्थानों में उसके साथ बैठाया'' (इफिसियों 2:4-6)। इफिसियों 2:8 में उसने आयत 5 की अभिव्यक्ति ''अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है'' को दोहराया।

प्रश्न यह *नहीं* है कि पौलुस अनुग्रह से उद्धार में विश्वास करता था या नहीं, बल्कि यह है कि वह अनुग्रह से *कब* उद्धार में विश्वास करता है। इफिसुस की मण्डली को इसकी समझ पौलुस की व्यक्तिगत शिक्षा से मिली होगी, जबकि हमें अन्य लेखों की जांच करके सीखना पड़ेगा कि उसके कहने का क्या भाव है।

इस बात पर पौलुस की सोच कुलुस्से की मण्डली के नाम लिखी पत्री में बड़ी स्पष्ट मिलती है:

> और उसी के साथ बपतिस्मा में गाड़े गए, और उसी में परमेश्वर की शक्ति पर विश्वास करके, जिस ने उस को मरे हुओं में से जिलाया, उसके साथ जी भी उठे। और उसने तुम्हें भी, जो अपने अपराधों, और अपने शरीर की खतनारहित दशा में मुर्दा थे, उसके साथ जिलाया, और हमारे साथ अपराधों को क्षमा किया (कुलुस्सियों 2:12, 13)।

इफिसियों और कुलुस्सियों के परस्पर सम्बन्ध पर ध्यान दें: दोनों पत्रों में पौलुस उन्हीं धारणाओं की बात कर रहा था: (1) अपराधों में मरे हुए (इफिसियों 2:5; कुलुस्सियों 2:13), (2) उसके साथ उठाए गए (इफिसियों 2:6; कुलुस्सियों 2:12), (3) उसके साथ जिलाए गए (इफिसियों 2:5; कुलुस्सियों 2:13), (4) विश्वास के द्वारा (इफिसियों 2:8; कुलुस्सियों 2:12), (5) हाथ से नहीं, अर्थात कर्मों से नहीं (कुलुस्सियों 2:11; इफिसियों 2:9), और (6) बचाए गए अर्थात सब अपराध क्षमा किए गए (इफिसियों 2:8; कुलुस्सियों 2:13)।

इन कथनों का आपस में एक जैसा होने का अर्थ यह होना चाहिए कि पौलुस एक ही घटना की बात कर रहा है। उसके पाठक बपतिस्मा लेने के समय विश्वास के द्वारा अनुग्रह से अपने पापों से बचाए गए थे। इफिसियों 2:8 में ''उद्धार हुआ है'' वाक्यांश *पूर्ण कृदंत* है जो संकेत देता है कि पौलुस किसी पिछले कार्य के कारण वर्तमान स्थिति पर विचार कर रहा था। एक *अनिश्चित भूतकाल कृदंत* के रूप में ''क्षमा किया'' (कुलुस्सियों 2:13) पिछले कार्य के पूर्ण होने का संकेत देता है।

पौलुस ऐसा तब कहता है जब कोई यीशु के साथ बपतिस्मे में गाड़ा जाता है और परमेश्वर के काम में *विश्वास के द्वारा* उसके साथ जी उठता है (कुलुस्सियों 2:12)।

पौलुस के अनुसार उद्धार विश्वास के द्वारा अनुग्रह से होता है। परन्तु, उसका अनुग्रह से उद्धार तब तक नहीं होता जब तक वह मसीह में कोई जी नहीं उठता और उसके साथ जीवित नहीं रहता (इफिसियों 2:5)। पौलुस ने स्पष्ट सिखाया कि उद्धार तभी होता है जब कोई परमेश्वर के काम में विश्वास के द्वारा बपतिस्मे में मसीह के साथ गाड़ा जाता और जी उठता है (कुलुस्सियों 2:12, 13)। हम आश्वस्त हो सकते हैं कि पौलुस ने सिखाया कि बपतिस्मे में यीशु के साथ गाड़े जाने और जी उठने पर विश्वास के द्वारा परमेश्वर के अनुग्रह से उद्धार तथा क्षमा मिलती है। कोई भी जो यह सिखाता है कि विश्वास में बपतिस्मे की आवश्यकता नहीं है वह इफिसियों और कुलुस्सियों के नाम पौलुस की पत्रियों की शिक्षा के

सम्बन्ध का विनाश करता है।

इफिसियों 2:4-9 और कुलुस्सियों 2:12, 13 को मिलाने पर, उद्धार पर पौलुस की शिक्षा स्पष्ट हो जाती है:

> परमेश्वर ने, जब हम अपराधों के कारण मरे हुए थे, तो हम मसीह के साथ बपतिस्मे में गाड़े गए, और उसी में परमेश्वर की शक्ति पर विश्वास करके [जो हमें मसीह में मिलता है, रोमियों 6:3], हमारे सब अपराधों को क्षमा करके मसीह के साथ जिलाया (अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है) और मसीह यीशु में उसके साथ उठाया और स्वर्गीय स्थानों में उसके साथ बिठाया, कि वह अपनी उस कृपा से जो मसीह यीशु में हम पर है, आने वाले समयों में अपने अनुग्रह का असीम धन दिखाए। क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है, और यह तुम्हारी ओर से नहीं; वरन परमेश्वर का दान है। और न कर्मों के कारण [हमारे अपने हाथों से नहीं], ऐसा न हो कि कोई घमण्ड करे।

बपतिस्मे में अपने आप में पापों को क्षमा करने की योग्यता नहीं है, इसलिए बपतिस्मे के समय उद्धार तभी मिलता है जब कोई परमेश्वर के काम में विश्वास के कारण उसके अनुग्रह पर विश्वास करके बपतिस्मा लेता है, जिससे अपराधों को क्षमा करने और उद्धार लाने के लिए पापों को शुद्ध करने वाला यीशु का लहू उपलब्ध हुआ है। विश्वास द्वारा अनुग्रह से उद्धार में बपतिस्मे को निकाला नहीं जा सकता बल्कि इसको शामिल किया जाता है, क्योंकि यही तो पौलुस ने सिखाया था (जैसा कि इफिसियों 2:4-9 के साथ कुलुस्सियों 2:12, 13 की तुलना से स्पष्ट है, जो कि इफिसियों 2:8 और 1 पतरस 3:21 के साथ मेल खाता है)।

1 कुरिन्थियों 1:17

1 कुरिन्थियों 1:17 में पौलुस ने लिखा था, ''क्योंकि मसीह ने मुझे बपतिस्मा देने को नहीं, बरन सुसमाचार सुनाने को भेजा है।'' कई लोग यह सिखाते हैं कि इस आयत में पौलुस यह संकेत दे रहा था कि बपतिस्मा आवश्यक *नहीं* है। ऐसा निष्कर्ष सच्चाई से बहुत दूर है, क्योंकि पौलुस ने बपतिस्मा दिया था और बहुत से लोगों को बपतिस्मा लेने की बात समझाई भी थी (प्रेरितों 18:8)।

यूनानी भाषा की यह संरचना (*ou* जिसका अर्थ नहीं ... *alla* जिसका अर्थ वरन है) का अनुवाद ''बपतिस्मा देने को नहीं, वरन सुसमाचार सुनाने को'' *पहले* विचार का खण्डन किए बिना *दूसरे* पर ज़ोर देने का एक ढंग है। रॉबर्ट डब्ल्यू. फंक ने इस संरचना पर टिप्पणी की, ''*ou ... alla* का अर्थ 'इतना नहीं ... जितना' भी है, जिसमें पहले तत्व को पूरी तरह से नकारा नहीं जाता, परन्तु उसका महत्व कम कर दिया जाता है: (मरकुस 9:37 ... मत्ती 10:20, यूहन्ना 12:44, प्रेरितों 5:4, आदि)।''[2] मैक्सिमिलियन ज़रविक ने इस नकारात्मक के सम्बन्ध में लिखा, ''सामियों की एक सदस्य को नकारात्मक रूप से व्यक्त करने की

विशेषता है जिससे दूसरे पर यह कहकर ज़ोर दिया जाए, कि A नहीं बल्कि B, जहां उसका अर्थ यह है कि A उतना नहीं जितना B, या A के बजाय B.'' उदाहरणों के लिए उसने 1 कुरिन्थियों 1:17; मत्ती 10:20; यूहन्ना 12:44; मरकुस 9:37; लूका 10:20; यूहन्ना 7:16 के हवाले दिए।[3] अन्य व्याकरण शास्त्रियों ने भी यही अवलोकन किया है।[4]

1 कुरिन्थियों 1:17 में पौलुस केवल इतना ही कह रहा था कि मसीह ने उसे केवल बपतिस्मा देने के लिए ही नहीं, बल्कि उसे सुसमाचार सुनाने के लिए *भी* भेजा है। वह यह नहीं कह रहा था कि मसीह बपतिस्मे को अनावश्यक मानता था बल्कि यह कह रहा था कि सुसमाचार को प्राथमिकता दी जाती है और बपतिस्मा दूसरे स्थान पर आता है। यह बात सत्य है क्योंकि जो लोग बपतिस्मा तो लेते हैं परन्तु सुसमाचार और बपतिस्मे के साथ जुड़े इसके अर्थ को नहीं समझते उन्हें केवल बपतिस्मा लेने से ही लाभ *नहीं* मिल सकता। उद्धार बपतिस्मा लेने से अधिक महत्वपूर्ण है; इसलिए सुसमाचार सुनाने को प्राथमिकता दी गई है ताकि बपतिस्मे के साथ जुड़ी वचनबद्धता की जिम्मेदारियों को निभाने के लिए सुनने वालों को तैयार किया जाए। पौलुस बपतिस्मा लेने वालों को सुसमाचार का अर्थ समझने की आवश्यकता पर बल दे रहा था।

1 कुरिन्थियों 12:13

पहला कुरिन्थियों 12:13 एक और पद है जो बपतिस्मे पर पौलुस की शिक्षा को दर्शाता है। इस पर चर्चा के लिए, पृष्ठ 168 देखिए।

सारांश

पौलुस ने बपतिस्मे को छुटकारे के यीशु के काम के लिए हृदय से मानने के रूप में देखा था। उसने इसे एक कार्य माना जिससे बपतिस्मे के लिए समर्पित व्यक्ति का जीवन प्रभावित होगा। उसने बपतिस्मे का चित्रण एक शारीरिक कार्य के रूप में किया जिसमें एक व्यक्ति नये जीवन और परमेश्वर के साथ नये सम्बन्ध में प्रवेश करने, मसीह को पहनने, पुराने जीवन को बदलकर नया व्यक्ति बनने, पिछले पापमय जीवन से छूटने और सब अपराधों की क्षमा व नया जीवन पाने के लिए यीशु के साथ आत्मिक रूप से मरकर गाड़ा जाता और जी उठता है। पौलुस ने बपतिस्मे को खोखला संस्कार नहीं बल्कि एक समर्पण माना था।

पाद टिप्पणियां

[1]जी. आर. बिसले-मुर्रे, *बैपटिज़्म इन द न्यू टैस्टामेन्ट* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशि. Wm. B. ईर्डमैन्स पब्लिशिंग कं., 1977), 273. [2]राबर्ट डब्ल्यू. फंक, *ए ग्रीक* ग्रामर ऑफ़ द न्यू टैस्टामेन्ट (शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रैस, 1961), 233. [3]मैक्सीमिलिय ज़रविक, *बिबलीकल ग्रीक,* अनु. जोसेफ स्मिथ (रोम: n.p., 1963), 150. [4]देखिए, उदाहरण के लिए, जेम्स एच. मोल्टन, *ए ग्रामर ऑफ़ न्यू टैस्टामेन्ट ग्रीक,* vol. 1, 3d ed. (एडिनर्ब: टी. एण्ड टी. क्लार्क, 1906), 329.